शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०क्रि०- पत्र

जयद्रथ वध — काव्य खण्ड

कवि- मैथिलीशरण गुप्त

हर शोक पाण्डव पक्ष का, निज शिविर में हरि भी गये,
फिर शीघ्र ही भगवान ने प्रकटित किये कौतुक नये।
कर योगमाया को सजग निद्रित जगत की व्याप्ति को।
झट ले चले वे पार्थ को शिव निकट अस्त्र-प्राप्ति को।

भावार्थ:- प्रस्तुत पद के माध्यम से कवि मैथिलीशरण गुप्त कहते हैं कि भक्त से छले जाने के बाद भगवान ने अपनी पूर्ण माया फैला दी। इसके पश्चात् पाण्डव पक्ष का शोक दूर करने के उपरांत स्वयं भगवान भी अपने डेरे (शिविर) में चले गये। वहाँ पहुँच कर उन्होंने शीघ्र ही नये-नये खेल करने आरम्भ कर दिये। सर्व प्रथम उन्होंने अपनी योगमाया की शक्ति को जागृत किया और उसे सम्पूर्ण संसार में फैला दिया। इसके बाद स्वयं भगवान अर्जुन को साथ में लेकर भगवान शिव के पास अस्त्र प्राप्ति के लिए ले गये।

प्रस्तुत पद में राष्ट्रवादी कवि ने भगवान की योगमाया का बहुत ही सुन्दर वर्णन किया है। भगवान शिव से अस्त्र प्राप्त करने के पश्चात् अर्जुन अजेय हो गये।

डॉ० देवचरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ० सं० महावि० सुरखसेना, पूर्णियाँ

16/4/20

आशी प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अं० द्वि०-पत्र

जयद्रथ-वध

कवि - मैथिलीशरण गुप्त

भावार्थ

"नर-देव-सम्भव वीर वह रण-मध्य जाने के लिए,
बोला वचन निज सारथी से रथ सजाने के लिए।
यह विकट साहस देख उसका, सूत विस्मित हो गया,
कहने लगा इस भाँति फिर वह देख उसका वय नया।"

भावार्थ:- प्रस्तुत पद के माध्यम से कवि वीर अभिमन्यु के युद्ध भूमि में जाने के लिए तैयार हो जाने का वर्णन करते हुए कहता है कि बालक वीर अभिमन्यु अपने सारथी से तैयार होने को कहता है। सारथी उसे समझाने का प्रयास करता है।

वीर अभिमन्यु मनुष्य रूपी देवता से उत्पन्न था। ऐसा वीर जब युद्धभूमि में जाने के लिए बिल्कुल तैयार हो गया तब उसने अपने सारथी से रथ सजाने का आदेश दिया। रथ को हाँकने वाला अभिमन्यु के इस विकट साहस को देखकर आश्चर्य चकित रह गया। उसके यौवन में इस अद्भुत साहस और उत्साह को देख कर कुछ कहना चाहता है।

प्रस्तुत पद में नर-देव-सम्भव कह कर कवि ने इस तथ्य की ओर इंगित किया है कि कुंति ने इन्द्र देवता का स्वयं आह्वान किया था जिसके फलस्वरूप जैसे पुत्र रत्न की उत्पति हुई। इस रूप में अर्जुन की शिराओं में मानवी और दैवी दोनों ही प्रकार के रक्त का सम्मिश्रण था जो अभिमन्यु को भी पिता से विरासत में मिला था। इसीलिए उसका साहस और उत्साह देखते ही बनता था।

डॉ० देव चरण प्रसाद 16/4/20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

Page No.:
Date: / /

कवि की प्रकृति के दर्पण में जब वह अपना मुँह देखता है तो उसके मन में अपूर्व आनन्द और सुख-शान्ति का अनुभव होता है।

डॉ० देव चरण प्रसाद 16/12/20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

आरोही द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०—पत्र

'पथिक' काव्य

कवि - रामनरेश त्रिपाठी

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर :—

प्रश्न :— 'पथिक' खण्डकाव्य में कवि ने प्रकृति को किस रूप में देखा है?

उत्तर :— कवि रामनरेश त्रिपाठी ने 'पथिक' खण्डकाव्य में प्रकृति को व्यापक दृष्टि से देखने की चेष्टा की है। कवि की पुस्तक की रचना के पीछे प्रकृति के प्रेरणा काम कर रही है। कवि ने पुस्तक के आरम्भ में 'मेरा कवित्व' में निवेदन किया है - "पथिक के पदों में मैंने प्राकृतिक दृश्यों को, जिसे देखा था, जगह-जगह टाक दिया है। कवि ने लिखा है- "श्री रामेश्वरम् की यात्रा में पर्वत, वन, नदी और समुद्र तट का प्राकृतिक सौन्दर्य देखकर मेरे मन को जो सुख प्राप्त हुआ है उसकी कुछ झलक इस 'पथिक' काव्य में लाने की मैंने चेष्टा की है।" इन पंक्तियों से स्पष्ट है कि कवि ने जहाँ-जहाँ प्रकृति का वर्णन किया है, वहाँ दक्षिण-भारत के भव्य रूपों का मूर्त रूप उपस्थित किया है। इसलिए प्रकृति वर्णन में किसी स्थान विशेष को ही अधिक स्थान दिया गया है।

प्रश्न :— 'पथिक' काव्य में प्रकृति का स्वरूप कैसा है?

उत्तर :— कवि त्रिपाठी जी प्रकृति में सुषुप्ति नहीं जागरण है, भावुकता नहीं सजलता है, अभिव्यक्ति नहीं जगाक स्नेह है। यही कारण है कि उनकी प्रकृति किसी रहस्यमय छवि-देश का संकेत नहीं देती, प्राकृतिक सौन्दर्य किसी रहस्यमय सत्ता शक्ति का सन्देश नहीं देता है। त्रिपाठी जी के काव्य में प्रकृतिसंबंधी रहस्यमय की खोज करना व्यर्थ होगा, क्योंकि वे उसके व्यक्त स्वरूप के प्रेमी हैं, उसके प्रच्छन्न रूप की झाँकि लेने के लिए आदि नहीं। उस

शेष अगले-